International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(I), April - June, 2024, pp. 67-71

राष्ट्र के विकास में महिला सशक्तिकरण का महत्व एव चुनौतियाँः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. कल्पना शर्मा*

सार

विकास के बिना किसी भी राष्ट्र की संकल्पना कर पाना असंभव है क्योंकि वास्तव में विकास ही उस राष्ट्र की नींव होता है। विकास की इस नींव को मजबूत करने के लिए उस राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का सशक्त होना अति आवश्यक है। इस तथ्य के महत्व को जानते हुए भी हमारे समाज में लैंगिक असमानता की जड़े बहुत गहराई तक विद्यमान हैं। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण योगदान देने के बावजूद भी महिलाऐं दुनिया के सबसे आर्थिक रूप से वंचित समूहों में से एक हैं। राष्ट्र के विकास में किए गए उनके योगदान को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। शायद यही कारण है कि आज हमें अलग से महिला सशक्तिकरण के नारे को मुखर करने की आवश्यकता हुई है।

शब्दकोशः *महिला सशक्तिकरण, विकास।*

प्रस्तावना

संपूर्ण विश्व के जनजीवन के विकास का आधार नारी को ही माना गया है। विश्व की प्रत्येक संस्कृति का केन्द्र बिन्दू नारी ही है, इसीलिए किसी भी राष्ट्र का विकास तब तक संभव नहीं है जब तक उसमें महिलाओं का योगदान न हो। हमारे ग्रंथों में भी नारी के योगदान को स्वीकार करते हुए उसके सम्मान को सर्वोच्चता दी गई है और कहा गया है

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता''

इसका अर्थ है जहाँ नारी की पूजा (सम्मान) होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है। अतः यह कहना सर्वथा उचित है कि नारी है तो विकास है क्योंकि जीवन का वास्तविक आधार भी एक नारी ही है।

इसी महत्व को समझते हुए 19वीं सदी के मध्य में नारीवादी आंदोलनों के प्रथम चरण की शुरुआत हुई और इन्हीं आंदोलनों से महिला सशक्तिकरण शब्द का उद्भव हुआ। महिला सशक्तिकरण, जिसका वास्तविक अर्थ है कि वह अपने जीवन के निर्णय स्वतंत्र रूप से स्वयं ले सकें, बिना किसी भेदभाव या सीमाओं के अपना जीवन जीने का अधिकार और स्वतंत्रता हो। सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक, आदि सभी प्रकार से उनका उत्थान हो। वास्तव में महिलाएँ राष्ट्र विकास में भागीदार बनने के लिए तभी सक्षम हो पाएंगी। सामान्यतः यह माना जाता है कि महिला सशक्तिकरण एक सामाजिक विषय है लेकिन वास्तविकता में यह सिर्फ सामाजिक न्याय का ही नहीं बल्कि आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण विषय है।

* Independent Scholar of Commerce

महिलाओं के संघर्ष और सफलताओं का एक लंबा इतिहास रहा है। यदि भारत के संदर्भ में देखें तो महिलाऐं वैदिक काल से ही प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान देती रहीं हैं। गार्गी, अपाला जैसी विदुषी और वीर महिलाऐं इसकी उदाहरण हैं। हालांकि इसके बाद महिलाओं की स्थिती में निरंतर गिरावट देखी गई लेकिन फिर भी हर युग में महिलाओं ने प्रत्येक चुनौती का सामना करते हुए अपने लिए नए रास्तों का निर्माण किया और हर क्षेत्र में अपने अस्तित्व का लोहा मनवाया है।

यह कहना गलत नहीं होगा कि राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की अहम भूमिका को नजरअंदाज करना भारी भूल होगी। बात चाहे आजादी से पूर्व अपना बलिदान देकर भारत को आजाद कराने की हो या आजादी के बाद देश को कुशल नेतृत्व प्रदान करके राष्ट्र के विकास को एक नई दिशा देने की, महिलाओं ने हर दौर में अपनी कार्यकुशलता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपने अस्तित्व की शक्ति को सिद्ध करके दिखाया है। कुशलतापूर्वक अपनी दोहरी भूमिका का निर्वहन करते हुए महिलाओं ने राष्ट्र विकास में अपना अतुलनीय योगदान दिया है।

बात अगर आजादी के बाद की करें तो प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की वृद्धि देखी गई चाहे वह रक्षा–अनुसंधान, राजनीति, अंतरिक्ष, खेल कूद, प्रशासनिक कोई भी क्षेत्र रहा हो। महिलाओं ने अपनी दूरदर्शी सोच व कुशल नेतृत्व क्षमता को प्रत्येक क्षेत्र में प्रदर्शित किया है।

नव भारत के निर्माण में महिलाओं की महती भूमिका रही है। राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं ने देश के प्रधानमंत्री पद से लेकर राष्ट्रपति पद तक को सुशोभित किया है। आज देश की संसद का 15: भाग भी महिलाओं को प्राप्त है। कृषि क्षेत्र को नई दिशा देने वाली ड्रोन तकनीक की पहली पायलट महिलाऐं हैं जो यह सिद्ध करता है कि 21वीं सदी के भारत की तकनीकी क्रांति को भी देश की नारीशक्ति एक सफल नेतृत्व प्रदान कर सकती है। रक्षा क्षेत्र में वर्ष 2016 से महिलाऐं भारतीय वायुसेना में महिला लड़ाकू पायलटों के तौर पर शामिल हुईं। इसके अलावा वर्ष 2020 में सर्वोच्च न्यायालय ने महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन देने का फैसला सुनाया जो महिलाओं के अदम्य साहस का ही प्रतिफल है। हाल में लॉंच किए गए चंद्रयान मिशन 3 में भी 54 महिलाओं ने अपनी उत्कृष्ट भूमिका का प्रदर्शन किया । अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी महिलाओं ने खुद को साबित किया है फिर चाहे वह कल्पना चावला हों या सुनीता विलियम्स जबकि वंदना लूथरा, किरण मजूमदार शॉ, नैना लाल किदवई जैसी महिलाओं ने बिजनेस में नए आयामों को स्थापित किया। खेल क्षेत्र में भी मैरीकॉम, पी.वी. सिंधु जैसी अनेक महिलाओं ने विश्व स्तर पर अपना लोहा मनवाया। महिलाओं ने स्वयं सहायता समूहों का कुशलतापूर्वक संचालन करके भारत में महिला सशक्तिकरण को नई दिशा देने के साथ ही एक नए इतिहास का सृजन भी किया है। ये सभी महिलाऐं प्रेरणास्रोत होने के साथ–साथ नारीशक्ति की जीवांत उदाहरण भी हैं।

आश्चर्य की बात यह है कि ऐसी अनेक सफलताओं और उपलब्धियों को हासिल करने के बाद भी उनेक संघर्ष में कमी नहीं आई है। आज भी वह अनेक विषम चुनौतियों का सामना करने के लिए विवश हैं। यहीं कारण है कि आज 21वीं सदी के भारत का सबसे महत्वपूर्ण चर्चा का विषय महिला सशक्तिकरण है।

विकास में महिला सशक्तिकरण का महत्व

- **आर्थिक समृद्धि :** राष्ट्र के विकास और आर्थिक समृद्धि के लिए महिलाओं का आर्थिक रूप से सशक्त होना बहुत आवश्यक है। आर्थिक सशक्तिकरण के बिना वह कभी पूर्ण रूप से सशक्त नहीं हो सकतीं। सशक्त और आत्मनिर्भर महिलाऐं नवाचार, उत्पादकता वृद्धि, उद्यमिता आदि को बढ़ावा देती हैं जिसके कारण गरीबी में कमी आती है और गरीबी का उन्मूलन किसी भी राष्ट्र के विकास की प्रमुख शर्त है।

मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट के अनुसार भारत महिलाओं को समान अवसर प्रदान करके 2025 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद में 770 बिलियन डॉलर अधिक की वृद्धि कर सकता है।

- **सामाजिक उत्थान :** किसी भी राष्ट्र के निर्माण में एक स्वस्थ समाज बहुत महत्वपूर्ण कारक होता है और एक स्वस्थ समाज का निर्माण महिलाओं के सशक्त हुए बिना संभव नहीं है। सशक्त महिलाऐं अपने

अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं जिससे समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दूर करके एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में सहायता मिलती है। इसी कारण से सामाजिक उत्थान संभव होता है और राष्ट्र को विकास के नए अवसर प्राप्त होते हैं।

- **शिक्षा :** शिक्षा विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा महिलाओं में ज्ञान, कौशल, उच्च नेतृत्व क्षमता का संचार करने के साथ–साथ उनकी सोच एवं समझदारी के दायरे को भी विस्तृत करती है। शिक्षा के प्रभाव से वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं, जिससे समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, अंधविश्वास, असमानता जैसे कारक जो एक राष्ट्र के विकास में बाधक होते हैं उनमें कमी आती है। एक सुशिक्षित, जागरूक और आत्मनिर्भर महिला देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निम्नलिखित तथ्यों से राष्ट्र के विकास में महिला सशक्तिकरण के महत्व को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

महिला सशक्तिकरण के समक्ष चुनौतियाँ

- **पितृसत्तात्मक मूल्य एव नियम :** पितृसत्तात्मक समाज सदैव अपनी आवश्यकता के अनुसार महिलाओं को ढालता और दबाता रहा है। भारत में इस व्यवस्था की जड़ इतनी गहरी हैं कि आज भी महिलाओं की सोच, जीवन जीने के तरीके, निर्णय लेने की क्षमता आदि को पुरुषों द्वारा नियंत्रित करने का प्रयास जारी है। महिलाओं के लिए नियम, कानून सब कुछ समाज ने सदैव अपनी सुविधा के अनुसार तय किया है। इस व्यवस्था ने अपनी रूढ़ीवादिता के कारण महिलाओं को विकास के अवसरों से वंचित रखा है। सुरक्षा के नाम पर उन्हें घरों में कैद होने के लिए मजबूर किया जाता है, जिसके कारण वह पूरी तरह से पुरुषों पर निर्भर हो जाती हैं और उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। दहेज प्रथा, बाल विवाह, सबरीमाला, तीन तलाक जैसे विभिन्न मुद्दे पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं।
- **लैंगिक असमानता :** सरकारों और विभिन्न संस्थाओं के प्रयास के बाद भी 21वीं सदी के भारत को कन्या भ्रूण हत्या जैसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। ये हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि जहाँ महिलाओं को देवी का दर्जा देकर पूजा जाता है, वहीं बेटियाँ जन्म लेने के लिए भी संघर्ष कर रही हैं।

प्यू रिसर्च सेंटर के अनुसार, वर्ष 2000 से 2019 तक कन्या भ्रूण हत्या के कारण भारत में 90 लाख लड़कियाँ कम हुई।

ऐसी ही अन्य विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट्स के अनुसार भारत में लैंगिक असमानता एक ऐसी प्रमुख चुनौति है जिसके कारण देश का विकास गंभीर रूप से बाधित हुआ है।

- **शिक्षा में असमानता :** महिलाओं का गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच न होना एक गंभीर समस्या है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय के अनुसार केवल 62.3ः ग्रामीण लड़कियाँ ही साक्षर हैं जबकि लड़के 80ः हैं। इस संस्थान के अनुसार वर्ष 2021 तक भारत में 15.1 मिलियन लड़कियाँ स्कूल से बाहर थीं।

इसी प्रकार **नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे–5** के अनुसार 2019–21 में 15–59 आयु वर्ग की लगभग 57ः महिलाएं एनीमियाँ से पीड़ित थीं।

इन आंकड़ों का कारण स्पष्ट है कि जन्म के साथ ही उन्हें भेदभाव का शिकार होना पड़ता है। उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं से वंचित रखा जाता है। यही कारण है कि शिक्षा व जागरूकता के अभाव में महिलाओं को कुपोषण जैसी समस्या का सामना करना पड़ता है।

- **अपराधिक प्रवृत्तियाँ :–** बढ़ता हुआ अपराध भी महिलाओं के विकास में एक बडी बाधा है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्व–5 के अनुसार 32ः (लगभग 1/3) विवाहित भारतीय महिलाऐं घरेलू हिंसा का शिकार हैं, जिनमें से केवल 14ः ही अपनी आवाज उठा पाती हैं। संयुक्त राष्ट्र ने तो घरेलू हिंसा के लगातार बढ़ते मामलों पर चिंता जताते हुए इसे 'छुपी हुई महामारी' की संज्ञा दी है।

इसी प्रकार भारत में हर घंटे महिलाओं के खिलाफ अपराध के 51 मामले दर्ज होते हैं। इसके साथ ही भारत में महिलाओं के खिलाफ बलात्कार चौथा सबसे आम अपराध है। एन.सी.आर..बी .के अनुसार भारत में 2021 में प्रतिदिन औसतन 86 बलात्कार के मामले दर्ज किए गए।

इसके अलावा यौन उत्पीड़न, दहेज हत्याएं, शोषण, बाल विवाह आदि अनेक विकराल समस्याएं भी उनके विकास के मार्ग को अवसद्ध करते हैं।

- **आर्थिक विषमता :** रोजगार के पर्याप्त अवसरों का अभाव, कार्यस्थल पर भेदभाव पुरुषों पर निर्भरता आदि अनेक कारण महिलाओं के आर्थिक पक्ष को कमजोर करते हैं। यदि उच्च पदों पर भी देखा जाए तो महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है (कंपनियों में केवल 11ः महिलाएं ही उच्च पदों का प्रतिनिधित्व करती हैं)। आज भी महिलाओं को समान कार्य के लिए पुरुषों से कम वेतन दिया जाता है।

  विश्व आर्थिक मंच के अनुसार पुरुषों की तुलना में महिलाओं को 34ः कम भुगतान किया जाता है।

- **प्रशिक्षण की कमी :** रोजगार परक शिक्षा का अभाव तथा प्रशिक्षण के पर्याप्त अवसरों का उपलब्ध न हो पाना भी महिलाओं की स्थिति को निम्न करता है। उदाहरण के तौर पर यदि देखें तो कृषि क्षेत्र में महिलाओं की बड़ी संख्या होने के बाद भी उन्हें कृषि, मधुमक्खी पालन और ग्रामीण हस्तशिल्प में प्रशिक्षण प्रदान करने के सरकारी प्रयास न के बराबर है।

लैंगिक पूर्वाग्रह, माता–पिता का नकारात्मक रवैया आदि ऐसे अनेक कारण हैं जो महिला सशक्तिकरण की राह में चुनौतियों के रूप में आज भी विद्यमान हैं और इन्हें दूर करना न केवल महिलाओं के विकास के लिए अपितु राष्ट्र के विकास के लिए भी अति महत्वपूर्ण है।

महिला सशक्तिकरण में सरकारी प्रयास : महिलाओं की दशा में सुधार करने के लिए कुछ सरकारी प्रयास इस प्रकार हैंः–

- बेटी बचाओ, बेटी पढाओं योजना
- सुकन्या समृद्धि योजना
- उज्जवला योजना
- प्रधानमंत्री जन–धन योजना
- लोकसभा व विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 1/3 सीटें आरक्षित करने के लिए महिला आरक्षण विधेयक 2023
- विज्ञान ज्योति योजना
- मिशन शक्ति
- मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017
- किरण योजना, आदि

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट होती है कि राष्ट्र के चंहुमुखी विकास तथा समाज में अपनी भागीदारी को महिलाओं ने सशक्त तरीके से पूरा किया है। निश्चित तौर पर महिलाओं ने पुरुष वर्चस्व वाले समाज में अपनी योग्यता से प्रत्येक क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है और अपने अस्तित्व की शक्ति का लोहा मनवाया है। यह भी सच है कि महिलाओं के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है लेकिन अभी भी देश की आधी आबादी अपने पूरे आसमान को पाने के लिए संघर्षरत है।

राष्ट्र के संपूर्ण विकास व निर्माण में महिलाओं का योगदान असीमित व अतुलनीय है। उनका हर प्रगतिशील कदम उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ राष्ट्र के संपूर्ण विकास में भी अहम योगदान रखता है। महिलाओं की सशक्तता न केवल उनके बल्कि एक राष्ट्र के भविष्य को भी तय करती है। आज भारत जिस 5

ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को पाने के लिए प्रयासरत है, उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए महिला सशक्तिकरण एक अति महत्वपूर्ण कारक है। निसंदेह सरकारों ने अपने स्तर पर विभिन्न नीतियों और योजनाओं के माध्यम से सहयोग किया है। लेकिन अभी भी बहुत लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

सुझाव

- समाज में मातृ या पितृसत्तात्मक व्यवस्था के स्थान पर एक निरपेक्ष व्यवस्था स्थापित हो।
- महिलाओं के अवैतनिक कार्य को भी सम्मान मिले।
- माता–पिता के सकारात्मक रवैये से महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी को दूर करके उन्हें अपने अधिकारों के बारे में शिक्षित व जागरूक किया जाए।
- महिलाओं को भी विधि निर्माण प्रक्रिया में शामिल करके एक सुरक्षित और न्यायपूर्ण व्यवस्था बनाई जाए।
- महिलाओं को स्थायी रोजगार की संभावनाएं प्रदान की जानी चाहिए जिससे श्रम कार्यबल में उनकी अधिक भागीदारी सुनिश्चित हो सके।
- महिलाओं की गुणवत्तापूर्ण और रोजगार परक शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित हो, साथ ही उन्हें कौशल विकास और प्रशिक्षण प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाए।
- समाज में लैंगिक पूर्वाग्रहों को समाप्त करने और लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करने के लिए समाज में जागरूकता बढ़ाई जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. योजना पत्रिका
2. कुरुक्षेत्र पत्रिका
3. दैनिक समाचार पत्र
4. सरकार द्वारा प्रकाशित विभिन्न आर्थिक व सामाजिक योजनाओं संबंधी शोध पत्रों का अध्ययन
5. आर्थिक समीक्षा के विभिन्न संस्करण
6. विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट
7. भारत का समाजशास्त्र – प्रो0 जयकान्त तिवारी
8. आर्थिक विकास एवं नियोजन – एस.पी. सिंह
9. भारत में महिला सशक्तीकरण की दशा एवं दिशा – डॉ. शैलेन्द्र सिंह
10. महिला सशक्तिकरण के नवीन आयाम – डॉ. इन्दु शर्मा
11. ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण – डॉ. दिनेश कुमार विश्वकर्मा
12. महिला सशक्तिकरण विचारणीय मुद्दे – डॉ. नीलिमा सिंह
13. विकास एवं नियोजन – वी. सी. सिन्हा
14. समाजशास्त्र –प्रो. एम.एल. गुप्ता, डॉ. डी.डी. शर्मा
15. प्रतियोगिता दर्पण (समाजशास्त्र विशेषांक)
16. क्रॉनिकल (मासिक पत्रिका)
17. आधुनिक एंव उत्तर आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धांत– डॉ. शीबा सिद्दीकी
18. प्रतियोगिता दर्पण (भारतीय अर्थव्यवस्था विशेषांक)

❖◆❖